

सहता निन्तामारी नाम प्रप्रदण Title-

Accession No - Title -

Accession No-

Folio No/ Pages -

Lines-

Size

Substance Paper –

Script Devanagari

Period -

Language

Beginning -

End

Colophon-

Illustrations -

Source -

Subject -

Revisor -

Remarks-

देवका राम

Author -

श्रीराम-भाग्रह्माच्नाच्

अग्रमं समयोर्गक्षेत्रधासार्वभयोत्त्रधास्त्रं इयोक्यतुर्नाञ्चाग्रह्मातेत्रननेनप्तत्। स्था उमेग्रांतेश्कीरेज्यासिकासिकासिकासिके से होते होते से ताम चरित्रह इभ्रावेगरना मिहरिमदं दे दिनिद्यंत्यमा मेना श्री ह करेल रोन्से निकास ॥ अधिनीरे वतीसातिकरई एं कि को ः॥ ५१॥ देश्रुतित्रये। स्न्तगष्ठवरे। हिएपं प्रविद्या देशायीन मामि किते वारेदंता हा दशका दशका दशका दशका दशका विविद्य से सं

र मधेसत्ववमधी। एं स्थमित क्यानिय वंविवास्वितः॥ त्यात्यकेकी चतुर्दिकावित वित्ववंचवं ।। विक्रमेन विदेष SKE अनुराधा संगेषु छो रेवागा मिनी करे।। विज्ञा HESP 4 SSP) NI. वां अवग्रहं हे ने ने पाव विविधियोग्या सामे विधियोग विधिया विधियो विधियो विधियो विधियोग विधियोग विधियोग विधियोग विधियोग विधियोग विधियोग विधियोग विधियोग धनमियाते। धनिशासि भरेवत्या त्रवा यं कत्यं यको। रहा। रेव तां श्रवणे प्रधोरे हिली सगवा हो। वनवे हो कर इंडे स

तरेश्वेश्वमेदिने॥ एशा वंशंच क्रव्यीरिकांदर्शं सका छंमीन्दर्णा जरेम सामञ्जीरां पंचम जाप्रवंश्वमे॥ दत्ता संस्थित के वर्म विकासिमें ध्विहिताद् स्प्रान्भिद्धिते वे स्वति मेहिस्य विद्या विद्या विद्या सिन्यम् न्त्र केंद्रोः साद्री आयासनार केंद्र सहस्वतिका इस्ट्रा २१॥ श्वाच्यस अव्यात जालम मधान स्दाह म्रान्स ही जो समर्व मार्भ प्रेश खाँ रिव -MS स्वाति 58. धाने थे विस्मित्रजलपा खेषा श्वेचाई WS K 9.7 WE B.E नवेत्रमधादां जिवल ने कव Wer B.M. किस्ट भिन्नारि कानि रसाला सेंडविधान केंब दें निजा FR TOR THIS E ज्या सा विशाषा केषा खारादिति अवोहन भारिते भ न्नला अभिने अभिय रहामगं वया विविश्वार्थ त्यन्त HIFE एका हिम्छिर भरणी एका भोधेची इंग्रेट तथनता लाइरे अवर्णमध्यम्बर्णना ने के लिखने कि ती कि सम्मिन के विश्वेष सम्मिन (J. 97)

राहिने जापे अभे क्याया विशाशिक्षां सवासिंड मस्त्र लेकादे सेवार ताराद्वेत्र यससावातिक संत्य थ्वास कतं करी माउ नेपाकं ग्रमंग्रहने। १ शासुन्नाणं पातनेस इवस्ट्वरमानित्रमें विह्रेश्रेष्ठ लिन्ना ज्याखेनच गुरुष्ग्रत स्वित लेन्सुमें स्थात। वस्त्रासाल सब्दुष्यिक स्याचना दिस्रवयो ना रक्तापवं न्या धाविद्यादेन ३ रावित्र इं कार्यक दावि। २ । संधा प्याः कृत व मं समग्रा रूपाण विष्ठ ग्राविरिक गुके ग्राकि मेन फवल

सकारिशमी छेड़े॥ धारच केरविष्ठ के की बिका के निपंच काविकंपंचित्रकंठंठकमास्थ्रमक्रामना।१५॥ दी नाशिहलन समें भुभ संडेशकला ये ते। पुनर्व में विशासा उ च जाततारां कृतिं त्यनेत्र। १६॥सर्व य क्रिक्र्नेतोरेवंवीज्ञेशिनाग्यक्रके। वीणिक्रिज्ञालेक्रीलिजारेक्षर

ग्रक्ते।मिषंदयेतयाल गेत्याभिषेचनं श्रमे॥१०॥ ॥ इति त्याभिषे कां। वस्पारंभो छो नुष्येहरों में शेतरे निया किती येमें ने वेवत्यं चन्नुभासंवा। ११॥ ।। इति कत्यारंभः॥ अप्रे:प्रियदंक यात्रविशाषां कि विकारितारे वतीरो दिणी वे वे अशाया मुत गन्यात्राहत्वावप्रधामिक्रेत्रे। क्लन वा हं त्रधमंत्रकृषी न्त्रत्येत्रात्यत्राविषाखायां वरोहिएपा मुलराणं त्रवकराषु व्याम्ब्रमां विचायां मेंत्रेस्वाती क्रांते व्या प्रविधाविभी

खेर-किविधीमुख इति ते ते ने ने गुरोनो में जादिन समिय सम दंतिमित्रे। ३आ सर्जगानित्रित्रे सर्वित खुक्र प्रावश्चित्र रेमा ग शिविनोने हा लेमा इति एवले। ३५॥ येका ति छितार युत्रक्ति अशा शित्र गुणे र भे जित्र विविद्य कि वासा से र वाय राम्यारि निस्त्र होते प्राणय न सोदिवस्त ने नावहा ३३३३३३३ नवानमा चरानित्र हिन्द्र भेषत्ने। सन्त श्रेष्ठ किंग्रिम जा उशाया मन्द्र विद्या सेंड साल विने प्राप्तन माभित्रमा किदिने में का द्वान सन्ने में भुमा उत्ता मिलाइं म अक्तादगण्यानियाः रित्रियोतं स्वपितं चतरावद्गे अस्रोवासः सेर्ट्यापित्राचित्र रित्रे THE STATE OF GUTUKU-Kangri University Harriver Diaction The by S3 Foundation USA

नुमारलय वर्ग वरोजी वर्णापतनी गुरीनिगहिता धर्मिक पात्रवर्षे ॥३०॥नी वणनेपारकर विकास समुनी इस्वानी मधान र जलें केत के सुमान र जलें केत के सुमान र ति स्थार में स्थान स्यान स्थान विलग्ताक्शा भागप्य विश्व ऋति सर्वे त्रावे वात्यस्त प्रेनोत्य भेव ग देशकण महन्य ता क्षेत्रण जणानिरिति धार शताचिम से स्टास्प रोपण मिहाकिकाजी विनायत्या उथा मित्रायरेड भंजमें इविभिन्न विक्रामका विमालिक कित्र के तमेल महा आकारि ति अभकारी गिरिताफ्रवेज्यद्वी प्रेंड्ट्स्य वर्भवधा महादेश देश विष्ठिता त्यचरमेत्रमधासुशसंस्पाकितिकंसहचमगलपाहिकाम

वर्ताहरानेरधस्य लगतः पा क्रेंग्सेः लयुतः शायता द्वारेशवस्यद्व (देन्द्र भारत स्वास्त्र महानेष विश्रज्ञितमानिना ज्याकारोगतेन उलवेशिनीवतारा स्रोका गदितिहरीडकपापरी ना॥४३॥ मायांसन्य दापन्य ये शहारेगा द्रश्लमार्थित है। विद्वाद हिंद्या । या स्थित वारमः प्राप्त हाति॥४४॥स्वाता प्रश्ने विवयाण्ये महित्र वेरं त्य में त्रे स्थिर तामवद्गायाम्ययावानगत्वम्यावानगावस्थारुपः खाः २ व ध्रायमञ्जाहिति धात्मेनगाः।। मासारः व्रवेषयंभा हिस्ल मिन्ने प्रापित्र कित्र के स्थाने के स्था ने ने जो पुरोस जाने जा तथा है दें स्वार्थ के प्रति के प्

रणीय-महगरोगमेश्वरेतने॥सुविधमुक्तेश्वरेटभुडे।सिर्द्विगिम वारयोः।।इर्धा वात्रादितिध्वमवातिलसार्पाधितितिको चरतमे विकवी इवारे।। स्मान रजाविर हिन स्पन्न नस्परासिह नेविधोरवलखरी भंग केंद्र १४। ११० काल पार्थ। ४०। १२ड धानानित्र चरे ने गुरोवारवर॰ ल मारे शविधोन जीववर्गस्या विद्या वद्या प्रशास ते।। शास्त्रो उप मित्र भागव वास्त्रमीते तिलेलरो॥१२॥श्रुऋह छे तनो यो प्यावारे संधाविष्ठायो॥४२॥ ति स्ताय प्रतिश्वाति विद्युक्ता र ते ने मारी मते। विद्युक्ता र ते ने समारी मते। विद्युक्ता र ते ने समारी मते। विद्युक्ता र ते ने समारी मते। विद्युक्त समारी मते। विद्युक्त समारी मते। विद्युक्त समारी मते। विद्युक्त समारी CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्तिभाविष्वासगपंचकामला जनमाम्मित्रकानवे॥ ह॥ ॥ श्री विद्यारंमः॥ गजान्वकर्मश्रमतिमग्रे उच्च नर्वसे॥ रेवत्यम्बन्स धायुहसाइम्यवणत्रेयाणा हस्त्रयानः वसृष्ठं देशितवुगांत्यमाव प्रमाण गर्म कर्ण गर्म हर्म वर्ण स्थान वर्ण स्थान इक्ति ने वेपारा।

लक्षमारवेगुरोनुधचेवमकत्राजनम्त्रमारसा ।(इसन्त्रात्रांत्रा वित्रायारि वती उपशास्त्रो इनवें सु हथ। स्वतो ऋति नये। बिन्यो हस्तेष ह वृत्र्रंशी। १६॥ पर्वत्रिति वर्स्यका भोमाकी क्रिविनामीप्राजनमण ए निष्यिधिक्षेयालवालक्तरिक्या। तसादि जितवे कर्ण इंदेष नर्व हु वियो र वती दिनी ये चाँ इंदेष के र्ता वियाभाषाविर्व वक्ष सम्बन्धितीयाहवे। द्यामे । व वपंत्रमां मों जी वंधोविधीयता खलचंड प्रतंत्रं महें दृष्टिं रं प्र गान्वगाना मं त्यारिंग सगंत्यका शनिवांस्य मो प्राचे। इत्यपवी वे।

चो बीचेंवि कवीर्यां इवेस खा।। रविवीर्या त्यरेखेटा जेका संक्रमण महा। प्र सर्यमादिनमं ग्रेलंपवा इ ए यत्वा नग्रेमं चता विरक्ते अ मणे ये विर चेपाइलेमवेव॥पर॥ ॥इतिमामणाउत्रो॥ ॥इतियाना।सर्वसिष् दशाये श्रेत्र से भो मश्नेश्वरेण त्रिषडायगते चंत्र स्त्रा द्या स्तारे हशायगी व क्रा प्रशास्त्र खोगा र्वा स्वीति मेगुरुधी धनस्त्री भाग नव्ये कार्ये अशीय के वारुं कुरसिविविषद्भागते अः इजनीयश्च वृद्यी छोत्यगतीनिविषद् आर वान्तेनं सगुः श्रेको यार्ववीयविश्ववरे॥६॥ ॥५ित्रगा-वरफले॥ ॥ त्रेवादिराश्रयोवणी-सत्रियोवैश्वश्वदक्षे॥ ब्रुक्षणेने त्रियां कर्णे मुक्ष

मुन्नाः वर्णकुंभकः।।पा। वाद्यां वाद्य ध्वति औतवस्र नीर जका शना व रवाग्वह्यश्चेकाह्याः सर्वगमा ग्रुमाः॥प्रा ॥इति शक्नाः॥काहं चर्म त्लामोगित्रलंलव्णमस्विकाञ्जगरम्बग्र सेलंकसधान कलीरिश्रापिशाखंडे।वंध्यामामजामुक्तकेश्राम्का अस्ति का तवनं कुर्व ने अधिव देश तथा। प्रधात के प्रक्रमाई वास जार लेक्ड्रताप्रमेणक्ततंत्रवाडदीनमतोविगलनाक्रमादिगापपणण इत्यप्राकुनाण्डनममिदिनभेगापंनविभिगमाद्रेरण्येषानागम वंत्याद्यात्रपंचस्त्रनाष्ट्रमागपद्रभ गद्रितना रागनारावलाद्वि

तानंतस्वदेवनगमविरिचित्रहत्वितामणेतन्तनम्बर्गणे। । योगनसंज्ञामग्रयोहि श्रत्रकोलं विश्वोलं द्वित्रो न्यरक्षे भोते। ये। सर्वेदर्युत त्वतीत्रकोते श्रेप्ति ते निस्त्रियोगे स्वयेद्व मेदा। १० दित्रास्त्र विस्त्रातिते विस्त्रितिस्त्रातिस्त्रातिस्त्रितिस्त्रातिस्त्रित्र मं ग्रहिन्यन प्रती चत्र घमित होते मध्येहिजा निपि विशापरवे च यात्रचा शास्त्र सीनियाप हरकेषु पियाच का दीन के न्या नीष नयस्यालकाञ्चासयोपयसकलिगिननेवसोप्रय 到初 ष्णायनं मकरक करयो निकक्ता आवड शीत्यानने नापन्य 19

या अन् कि रोग हि ने अप विष्ठ विष्ठ है अप विष्ठ विषठ विष्ठ व

वंस्था। वाकात्मां प्रसम्बरेकीं उपस्याधरेशका धवतं. वद्विद्धाः वाक्षिते नुभूमे हितने अद्योग्य विद्याय विद्याय विद्याय विद्याय पाटा शास्त्र विद्याय विद्याय पाटा शास्त्र विद्या विद्या विद्या

स्त्रिक्ति पा

रिक्तिस्त्रमस्क्रमस्क्रमस्क्रमस्क्रमस्क्रम्भावणास्त्रभ्यात्वणमः भूमहर्णपाम्विकदर्शनेपि। ११। मान्यकी दिवारेसे जोते कक स्पाद्विकीपका रिक्रोः १-नवाः २-गजाटसया १२ घट्या हा र आ एसा जकारे। १३।। सिताहलेनाग न त्यादरविगानुवानिविष्टास्क्राग्रादिपंचके।। किंस्क्राज्ञर्धः प्रकृतेसकाल **高原。全位在** व्हतमाति ज्ञानान विस्तित्व के रे हो हो हो हो हो हो हो तातिमानि स्वाम् एवं नेव 图4.5.3别 A: 13.5. 3 ममसेकमणे वहासक्त ज्ञासक्तम वेनेहः समा क्रेस इहार्च वर्वले॥ स्वाह महती दे फ ले ४५ फलंब ले महर्जा १ मधीता ५५ फलमहिता विद्धारका अचा दत्ती रेने श्रियाविद्या

क्षनामसम्बेत तलाजाविषवंविर उपदे सिहातिगाचि हा। छ।। संक्रांतिकालाड्सयं ननिष्ठकाः अएपामना या उपाया उराया उराया ।।। मिर्शायती व गप्रवस्क्रमेव्रवाप्राहिमवर्वभागयोगापाव्याविष्ठीक्षेयिष्ठिनमं यादिन इयं अलाम या स्वासात्। वर्षपरसाद्याद्याय के म्यायन दिन वर्षे परेनु उले क्यं हा। संध्यात्रिनां प्रतिनाकी विवाद धीदितास्ता दध कर्ष प्रशाचे द्या स्थाने या स्थाने ्याताः उत्तंत्रन्ते परवर्वधको। जायायने विन्यपदेवादा मधाननंत्र ज्ञाण उन्नीत्मन ने में मिपराना डेमाति वृत्य चाला तथाय ने जाः वरषाः ह दतश्रमार्शक्रात्माविहितादिनाचेः॥मेषादितः शक्रचलछेक्रमासुः धने न्जणरोवङ्गुलारासी। था समेश्रव्हिष्ठवष्ठम्वातिम्बानिष्ठवास्य मं वर्तस्यात्। ६५विहिसेविदिसंत्रध्यसार्ये वतार्जितिलशाकायाम्।।१०॥

विष्टि श्रे वेश दे जनमधीकालायुरः १० खंडकोश जाति र्देवतीन्त्रत्रसर्वअविकाण्डणभ्येष गांश्विभागताः त ञाट वेश्यक र भाइ १० शंब, र भुवा शंघुळ्य च पुन्नाम केर जातीर वार्कुल के ते ना निचर मधा विस्ता गराम ग राम गयो गया गया गरामगरामगरामगरा योक्तासामाजातालाला राजा श्रीकला

15

20

ववद्यावकीत्यक्रम्बार्वान्व क्रित्रहार्थे क्र पैकालाध्यति १ किनेटकेबले देशि स्याद्र ये डी गरी रेगा था रेव दें वे डी गरी से प या प्राट के प्राट के प्राट का जा भी स्वय जरमन्त्राप्यमानंत्र में त्या अवका नव ४६ मधे पद्याष्ट्र चित्रतान्त्र १९३६ नध्यार जेप्रतयार्थकराश कालेपार मनो निव्य न न मधापारी र ३ र ४ द्रो तन पया द स्वार ने

इतिश्रीरेवक्तावंतवत्रविरावावरावतेमहर्तवित्तावणेनं अ

श्रीगम

पर्वहर्स्त्रीण्वज्ञर॥१६॥स्यामातिकारपारलिका१०जपाच॥ ग्रं तिवाजा अनवाह ना दें।। ना शास्त्र ह सुपनी विने चास तापविषः स्वपतांचनाषः॥ भागंनातिष्ठिक्षाधरिषिस्त निमें उस्तमिन कंगमन न नागमा स्वित्रिये उपीड नर्मगृह मस्विति उमेर्यनि निरम्भ धनागमः॥ १८। निष्य णश्मव कतिस्र र मंगरं र पा स्रिविविक प्राप्तरी स्र लेख र वें।। वीर्षय तारावल तः श्रमाविक विधार्वलेकी। कैवलेक जादवः। १थे रशास्त्रशास्त्रतिविधिनउक्तामितिधिमामः स्प्रमासन क्तादिसं क्रमात्रतिविधासिकोः हिमाशोत्रयमास्त्रते ।

वंश्वनिद्यापार गर्जेही हा अनेदेश द्यारा भिनुरसिष् १३१६ शिवार्से १९१३ ३ क्रमाख्मीविद्ध इतिग्रह्या वित्रापत्रवात्रविद्यान्त्रवात्रवात्र इंटेगिवेद्येदोतिवर्गत लिखानुमोहिकाल्यमदः सिते ३:४स्वजन्मराश रिहवेधनाह्रस्येग्रहाखिस्त्रग्रितःसःहिमा दिविध्यात्र युवने भीन्य विदेशिक्ष तिकार्यणे (क्रः यजन्मद्रिनधने ग्रह्जानि मतासातः क्रि श्रा के या वितासीर या के लंबे ने स्थाप्र में तथ स्थुमी

24

स्योर सात्रे हारश्यवयुगेर । ४ जिन ने दे अ रेशिवान्यो ११। ५ भैनशना राष्ट्रम्यर एं। कवा धा-रे ली मरारे ११। ५ गुणा सङ्ग्रहाहराद्यो राष्ट्रगुणन्योष्ट्रभार गला में क्षेत्रशादवाचारारे-११-४१ माले हार्रनगड्येशह निहिएरिया अबिरामिषा नरसा कया शास नी जावियो टार्यनागरेशट लाभवाये ११/१२देवगरः शराबी थान्छ ह्यातनवारीरार दिगु सिन्धानिशान्य कें के नाजे सिहिन ते प्राप्त किन के किन किन के

२३

जनिन्द्री सम्बन्धित विभाजितिक विभाजि विनाराणि हादिराश्रवामेन इन्हणक्वरनया अवेदवेदविन्मा इरी े वारे वही रुला। २ ।। रिविर्द्ध यं का राउं शिष्ट्र है स्वक्र विदिश्वान्त्र ग्राम कुतःग्राचं दशित्वा के की कामार १२। विति भागामको त्यार हिस्तुतप्रयंकारालं धनश्रीरविनंदनं विषद् मा का दीचलेतमंग ।।इतिदीचा कुंडालिनी।। वशाप्रमयविभवना त्रमोदोधत्रजापितः। श्रेगिरात्री मुखामावायवाभाता तथा अस्। वस्।

संभात्य अन्य जात्र राये हात्मसंभु वा। जिकाव के जिकाव वन्यना प्यामोगी या अवस्त्रति विविश्लं धनारित मित्र विविश् शंक दिग्विम्हान्यमेविक।वियोगेम् वयोगेषिकतंकां निविधाते। तथा शीर्वगते सर्वदिश्याणमनं विनाग १ ह। इतिसंन्यति विनारमा ग र्द्यमित्रित्रिभंदेवसर्यसोम् भित्रयात्री। कुत्रेगुरोग होकेते होमेनुभाष श्रमां॥१॥वागित्वतातिधिसेकावेदाशासेगुलेस्थिते।भूवविकास्व ल क रकामिनधोदयोः समोध्रिव।।१८।।इतामिनकं।। त्रान्यांनाग्रुखं उधे न न (र्नादितामात्राविनकार्तिकार्मात्रालानश्रकतःकप्रतयायाम्

जनसम्बस्या ४१। सिन्नाहिम्रलेइहरीया वास्मेन्नेतिक्यासा त्रेषकुभगेवि ध्याष्ट्रितस्पदार्वयमित्रामंसजेत्रययावितानंग्रह्गोपनादिनाभ्रदामङ्गित या २।११२ रविज्ञस्तन यार्कवारेबी प्रार्वमा जनरणिदितव क्रिवेखा नेषुक ग्रमन्तिस्स् विनाग्रन्थोत्रेगुणनिष्ठगुण र दसुतस्यांद्रे।४४॥ मुकर्ष मुद्रशस्त्रस्त्रकः।१४।१२ नेवास् शहारातीहणात्रभेपोलेवारणभीतेष्ठकरि नेन्य्रनाधिमाला विने। पामे इन्नासर्य तिने म्यापप्रहोदे वे ने मुक्त सरीम त्रावेधतयोः प्राव अति इति हो हो तपने विते।।।पद्मा ।। तम् ११२०।१४ त्र त्रार पा १४।२३ तरवी हीत न्स्रांते ४।१२ झे न कर्नु नेस सधी प्रत्रम गादिति अवि शावा चं धिमेने विन्या श्रेष्टी के अविधी दिने ऋते करस्य स्विष्ठ स्रेते था। पा

नाष्ट्रमानितिलेहरी॥२॥श्रक्तरहोतनी सोमानारेसंधानित्वात्राध्यालन्त्र स्ताध्य्रिति हिन्जान् जनुमें माया हता रिविध्य विभाविना प्रशाह्य गेगते तनुलवेग्राविजीवताराषुकोकरादितिहरीइकपेपरीक्ता।४३॥वावा।२४८% श्चेपनये अधा । । । । लाम गेनुम र खते। चंत्रे निरुष हर आये । । । स्मेपनी रंभः असिध्यति॥४४॥स्वाती इत्रवीकिवमणिमहित्रवीरंगस्विरतामवे इत्राम् माम्यवाक्रणतक्षेत्रीवा ११ घस्त्राहिपद्यो १५ घार्थिपार्कवास्त्रो ४ पान्नलि दास्रेनवरित्राभेनावारः अध्याप्रेत्यापितिसारभेनगाः॥ मासे ३ ज्यवेश्व यममहिम्लमेभित्रे प्रतिभेक्ति कित्रे कित्रिक्ति के कित्र के नित्र क प्रवीदिदेववस्वितिष्ठपापविशारिकाल्रिश्यकंदिने-चरोगेश्री चुंभवेत्री



